में बागवानी को बढ़ावा देने तथा किसानों को प्रशिक्षण देने हेतु कोई कार्यक्रम बना रही हैं;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या हैं; और

(ग) इसके लिए प्रत्येक जिले को कितनी धनराशि आवंटित करने का प्रावधान है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल) : (क) और (ग) कृषि तथा सहकारिता विभाग वर्तमान में पर्वतीय जिलों सहित उत्तर प्रदेश को फलों, सब्जियों, जड़ तथा कन्द फसलें, मशरूम, फूल, मसालें, औषधीय व सुगान्धित पौंधों, ड्रिप सिंचाई तथा संरक्षित कृषि, मधुमक्खी पालन सहित बागवानी विकास तथा कटाई प्रश्चात प्रबंध के लिये अवसंरचना विकास के लिये सहायता प्रदान कर रहा हैं। इनमें से अधिकांश योजनाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्तमान वर्ष के दौरान बागवानी योजनाओं के अंतर्गत उत्तर प्रदेश को 307.27 लाख रू. आबंटित किये गये हैं।

राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को धनराशि का आबंटन विभिन्न बागवानी योजनाओं के अंतर्गत किया जाता हैं। राज्य सरकारों द्वारा जिलावार आबंटन आवश्यकताओं तथा प्राथमिकताओं के आधार पर किया जाता हैं।

Problems of Pestilence in Andhra Pradesh

322. SHRI YERRA NARAYANASWAMY: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether ICAR has studied the problems of pestilence in Andhra Pradesh in 1997-98;

(b) if so, what are the general findings of ICAR in this regard;

(c) whether it is a fact that organic pest control has not been tried by ICAR;

(d) what are the inhibitions of ICAR in promoting organic and natural pest control; and

(e) the steps proposed to reduce dependence on pesticides?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) Yes, Sir. A high level committee of scientists was constituted by ICAR to investigate the causes of failure of cotton crop in Andhra Pradesh.

(b) The salient findings of the commit tee are:

1. Cotton crop was severely affected by a combination of unusual weather conditions and heavy pest out-break. The loss was particularly heavy in the northern belt, especially in the three districts of Warangal, Khammam and Karimnagar. The extent of crop loss varied from 25 to 50% with an average of about 30% overall loss in the three affected districts.
2. The cotton crop was severely attacked by pests, particularly Spodoptera litura and Heliothis (Helicoverpa armigera) causing heavy damage not only to cotton but also to sunflower, red-gram, groundnut, gram and chillies.
3. The farmers in the affected areas do not seem to be aware of any IMP methods. Their knowledge is limited in most cases to use of pesticides only.
4. The development of resistance to pesticides in Heliothis is a serious consequence of the misuse of pesticides leading to failure of pest control operations.

(c) No, Sir. Organic Pest control which refers to non-pesticidal methods is an integral part of the Integreated Pest Man agement (IPM) approach. IPM research aims to minimise and even eliminate the use of pesticides. Research has made it possible to manage pests in many crops such as sugarcane without the use of pesticides. Similar efforts are on to de velop non-chemical pest control methods for other crops including cotton.

(d) in view of (c) above, the question does not arise.

(e) (i) Easily adoptable and economically viable IPM packages have been recommended for adoption for major

crops such as cotton, sugarcane, rice, pulses, oilseeds and vegetables.

(ii) IPM strategies for different crops have been jointly formulated by the ICAR and the Department of Agriculture and Cooperation in consultation with State Agricultural Universities and State Departments of Agriculture. These have been widely circulated to all the concerned states for implementation.

(iii) Farmer participatory research programmes including trainings have been initiated to demonstrate IPM technology to the farmers in 'hot spots' in the country.

Crop Insurance

323. SHRI YERRA NARAYANA-SWAMY: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether any comparative study has been done of the prevailing system of crop insurance in other countries for the benefit of farmers;

(b) if so, the systems and countries which have been studied for their Crop Insurance System;

(c) whether Government will modify the existing system of crop insurance; and

(d) if so, the broad modifications proposed?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) No such study has been done by the Government in this regard.

(b) Does not arise.

(c) and (d) To enlarge the coverage in terms of farmers, crops and risks under the existing Comprehensive Crop Insurance Scheme (CCIS), it is proposed to introduce a Modified Comprehensive Crop Insurance Scheme (MCCIS).

मौसम विभाग की असफलता

324. **श्री गोविन्दराम मिरी** : क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या कच्छ क्षेत्र में आये चक्रवात से हुई भारी क्षति के लिये गुजरात राज्य सरकार और केन्द्रीय मौसम विभाग दोनों ही समान रूप से दोषी हैं;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने इस संबंध में तथ्यों का पता लगाया हैं;

(ग) क्या राज्य सरकार, केन्द्रीय मौसम विभाग और कांडला पत्तन न्यास के बीच प्रशासनिक तालमेल का अभाव था;

(घ) क्या राज्य सरकार ने मौसम विभाग की चेतावनी को गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया था; और

(ड.) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल) : (क) से (ड.) उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत मौसम विभाग ने गुजरात सरकार को 5 जून, 1998 से चेतावनी देना शुरू किया। राज्य सरकार ने कथित रूप से 6 जून, 1998 से कार्यवाही शुरू की। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा दी गई सभी चेतावनियों तथा सावधान रहने के संकेतकों को जिला प्रशासनों तथा प्रकार्यात्मक विभागों को सम्प्रेषित किया गया था। राज्य सरकार ने संबंधित प्रशासन को अत्याधिक सजग बनाये रखा तथा उनको आवश्यक पूर्वोपाय करने की सलाह दी। जिलाधिकारियों को चक्रवात तथा अत्याधिक वर्षा की स्थिति में राहत व बचाव कार्य करने के लिये तैयार रहने के लिये सचेत किया गया था। राज्य के मुख्य मंत्री द्वारा स्थिति की कथित रूप से 3 जून को तथा सेना और वायु सेना के प्रतिनिधियों सहित सभी संबंधितों के साथ राज्य के मुख्य सचिव द्वारा 9 जून को समीक्षा की गई थी। कान्डला पत्तन न्यास के प्राधिकारियों ने 8 जून को पत्तन के अधिष्ठानों की सुरक्षा करने के लिये उपाय किये। अन्ततः चक्रवात गुजरात तट से 9 जून, 1998 को पार कर गया तथा राज्य सरकार, आई.एम.डी. के पी.टी. तथा अन्य एजेंसियों द्वारा किये गये उपायों के बावजूद चक्र एजेंसियों द्वारा किये गये उपायों के बावजूद चक्रवात की गम्भीरता के कारणा हुई हानि को रोकना सम्भव नहीं हुआ।